अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य शोध का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय

संबंधी साहित्य शोध का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

किसी भी क्षेत्र में अनुसंधान की प्रक्रिया में संबंधी साहित्य का पुनरावलोकन अत्यंत महत्वपूर्ण कदम हैं। शोध कार्य के अंतर्गत शोध संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक एवं अनिवार्य प्रक्रिया है।

वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान को बढ़ाया जा सकता है। संबंधी साहित्य से तात्पर्य है, अनुसंधान की समस्या से संबंधित सभी प्रकार के साहित्य पुस्तकों ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध, प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से हैं। जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं का निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा आदि तैयार करने एवं अनुसंधान कार्य को उचित दिशा में बढ़ाया नहीं जा सकता। जब तक अनुसंधानकर्ता को ज्ञान न हो जाये कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है? तब तक न तो समस्या का निर्धारण कर सकता हैं और न ही दिशा में सफल हो सकता हैं।

जॉन डब्लू बेस्ट के अनुसार – "व्यावहारिक रूप में सम्पूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों और पुस्तकालयों मे मिल सकता है। अन्य प्राणियों से भिन्न मानव को अतीत से प्राप्त ज्ञान को प्रत्येक पिढ़ी के साथ नये ज्ञान के रूप मे प्रारम्भ करना चाहिए। ज्ञान के विस्तृत भण्डार मे उसका निरंतर योगदान प्रत्येक क्षेत्र मे मानव द्वारा किऐ गये प्रयासों की सफलता को सम्भव बनाता है।

2.3 पूर्व में किये गये शोध

(1) <u>विद्या प्रतिभा</u> – (2006) ने "विद्यार्थियों में तनाव का कारण विद्यालय का समायोजन एवं उसका प्रभाव पर शोध किया है।

उद्देश्य (Objective) विद्यालय में विद्यार्थियों में तनाव का कारण और समायोजन का अध्ययन।

निष्कर्ष – शोधों में पाया कि विद्यार्थियों में तनाव का 40 प्रतिशत कारण विद्यालय में समायोजन न होना।

(2) **नारायन राव** :– (1967) ने एक अध्ययन में समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन किया अपने अध्ययन में राव ने यह देखा कि समायोजन संबंधी समस्याए निम्न उपलब्धि प्राप्त करने वाले व्यक्तियों से अधिक संबंधित होती है।

उद्देश्य (Objective) :– विद्यालय में विद्यार्थियों में समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन

निष्कर्ष :– शोधो में समायोजन संबंधी समस्याए निम्न उपलब्धि प्राप्त न होना।

(3) **सक्सेना बन्दना** (1988) – ने विभिन्न प्रकार के पारिवारिक संबंध रखने वाले विद्यार्थियों के समायोजन ने अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक –उपलब्धि पर शोध किया है।

उद्देश्य (Objective) :– विद्यार्थियों के समायोजन अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

निष्कर्ष :– शोधों में उन्होने पाया कि विभिन्न प्रकार के पारिवारिक संबंध रखने वाले विद्यार्थियों के समायोजन, अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

(4) **अग्रवाल कुसुम** (1999) ने "असफल एवं उपोडीन विद्यार्थियों का समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि का स्तर निम्न या उनके अनुसार अभिभावकों का व्यवहार विद्यार्थियों के समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि" पर शोध किया है।

उद्देश्य (Objective):– असफल एवं उपेक्षित विद्यार्थियों का समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

निष्कर्ष :- शोधों में उन्होने पाया कि असफल एवं उपेक्षित विद्यार्थियों का समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि का स्तर निम्न या उनके अनुसार अभिभावकों का व्यवहार विद्यार्थियों के समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

(5) <u>अग्रवाल रेखा</u> (1998) ने माता-पिता द्वारा प्रदान किया गया निर्देशन व पध्यति प्रदर्शन बालकों के अधिक अच्छे शैक्षिक दृष्टिकोण एवं शैक्षिक उपलब्धि पर शोध किया है।

उद्देश्य (Objective) शैक्षिक दृष्टिकोण एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

निष्र्कर्ष - शोधो ने उन्होंने पाया कि माता पिता द्वारा प्रदान किया गया निदर्शन व पद्धति प्रदर्शन बालको के अच्छे शैक्षिक दृष्टिकोण एवं शैक्षिक उपलब्धि में योगदान करना है।

(6) <u>**गर्ग चित्रा**</u> (1992) ने ''पारिवारिक सम्बन्धों, सामाजिक, आर्थिक स्थिति, बुद्धि तथा विद्यार्थियों के समायोजन'' पर शोध किया है।

उद्देश्य (Objective) :- सामाजिक, आर्थिक स्थिति, बुद्धि तथा विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन।

निष्कर्ष :- शोधों में उन्होंने पाया कि पारिवारिक सम्बन्धो, सामाजिक आर्थिक स्थिती, बुद्धि तथा विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक सम्बन्ध पाया है।

(7) <u>**गरीगोटोय एस.एम.**</u> **(1984) :-** ने माता-पिता की विशेषताओं तथा व्यवहार का प्रथम बालकों के समायोजन पर शोध किया है।

उद्देश्य (Objective) :- माता-पिता का व्यवहार तथा विद्यार्थियों का समायोजन का अध्ययन।

निष्कर्ष :- शोधों में उन्होंने पाया कि माता पिता की विशेषताओं तथा व्यवहार का प्रभाव बालको के समायोजन पर शोध किया है।

(8) <u>**भवोरिया विवेक**</u> (2002) ने ''किशोर छात्र-छात्राओं के स्व प्रत्यय का उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन''पर शोध किया है।

उद्देश्य (Objective) :- किशोर छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का स्व प्रत्यय अध्ययन।

निषकर्ष :- शोध में पाया कि किशोर छात्र–छात्राओं के स्व प्रत्यय का उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन में सार्थक संबंध है।

(9) <u>कुमार महेश मुझाल एवं कुमार सुभाष</u> (2008) :–उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों कि शैक्षिक अभिप्रेरणा का समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि" पर शोध किया है।

उद्देश्य (Objective) :- उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों कि शैक्षिक अभिप्रेरणा का समायोजना तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

निष्कर्ष :- शोध में पाया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों कि शैक्षिक अभिप्रेरणा का समायोजना तथा शैक्षिक उपलब्धि का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

(10) <u>कुमार सुभाष</u> (2003) ने "माता–पिता का विद्यार्थियों की शैक्षिक क्रियाओं में सहभागिता का प्रभाव समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि का" पर शोध किया है।

उद्देश्य (Objective) :- माता पिता का विद्यार्थियों की शैक्षिक क्रियाओं में सहभागिता का प्रभाव समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

निष्कर्ष :- शोधों में पाया कि माता–पिता का विद्यार्थियों की शैक्षिक क्रियाओं में सहभागिता का प्रभाव समायोजन तथा शैक्षिक उलब्धि पर पड़ता है।

(11) <u>पवार एवं उनिवाल</u> (2008) :- न " विद्यार्थियों के लिंग अनुसार उनके पारिवारिक, सामाजिक स्वस्थ, एवं संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन पर शोध किया है।

उद्देश्य (Objective) :- विद्यार्थियों के लिंग अनुसार पारिवारिक सामाजिक स्वास्थ, संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन।

निष्कर्ष :- शोधों में पाया कि बालिकाओं के पारिवारिक सामाजिक, स्वास्थ एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(12) <u>सक्सेना बन्दना</u> (1988) ने विभिन्न प्रकार के पारिवारिक संबंध रखने वाले विद्यार्थियों के समायोजन अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक–उपलब्धि पर शोध किया है।

उद्देश्य (Objective) :– विभिन्न प्रकार के पारिवारिक संबंध रखने वाले विद्यार्थियों के समायोजन अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक–उपलब्धि का अध्ययन।

निष्कर्ष :– शोधों में उन्होने पाया कि विभिन्न प्रकार के पारिवारिक संबंध रखने वाले विद्यार्थियों के समायोजन, अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

(13) <u>हरलॉक</u> (1975) :– के अध्ययन में यदि स्कूल का वातावरण आवश्यकताओं की पूर्ति होने वाला हो तो छात्रों का समायोजन अच्छा रहता है और उपलब्धि भी आवश्यकताओं की पूर्ति न होने वाले वातावरण स्कूल की अपेक्षा ज्यादा होनी है। स्कूल या कॉलेज के अनुपयुक्त सांवेगिक परिस्थिति से छात्रों में चिंता एवं घवराहट उत्पन्न होती है और उनकी शैक्षिक निष्पादन कम दिखाई देना है।

उद्देश्य (Objective) :– विद्यार्थियों का अध्ययन स्कूल का वातावरण, छात्रों का समायोजन और उपलब्धि भी आवश्यकताओं की पूर्ति न होने वाले वातावरण स्कूल सांवेगिक परिस्थिती से छात्रों में चिता एवं शैक्षिक निष्पादन का अध्ययन।

निष्कर्ष :– शाधों में उन्होनें पाया कि विद्यार्थियों का अध्ययन में स्कूल का वातावरण, छात्रों का समायोजन और उपलब्धि भी आवश्यकताओं की पूर्ति न होने वाले वातावरण स्कूल सावेगिक परिस्थिती से छात्रों में चित्रा एवं शैक्षिक निष्पादन।

(14) <u>राव</u> (1967) :– ने "समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध का अध्ययन" किया। उन्होंने पाया कि निम्न उपलब्धि प्राप्त करने वाले व्यक्तियों की समायोजन संबंधित समास्याए अधिक होती है।

उद्देश्य (Objective) :– समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि के बिच संबंध का अध्ययन।

निष्कर्ष :– शोधों ने उन्होने पाया कि समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध।

(15) <u>खान</u> (1969) ने 'विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, शिक्षा पद्धति, समायोजन की आवश्यकता, उपलब्धि की चिंताओं का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया अपने अध्ययन में खान ने पाया कि उपरोक्त कारकों का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव प्राप्त हुआ तथा उपरोक्त सभी कारकों में बालिकाओं का उपलब्धि स्तर तथा अभिवृति बालकों की अपेक्षा उच्च प्राप्त हुई।

उद्देश्य (Objective) :– विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, शिक्षा पद्धति, समायोजन की आवश्यकता, उपलब्धि की चिंताओं का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

निष्कर्ष :– शोधों में उन्होनें पाया कि विद्याथियों की अभिवृत्ति, शिक्षा पद्धति समायोजन की आवश्यकता उपलब्धि की चिंताओं का शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव।

(16) <u>श्रीवास्तव</u> (1975) ने इण्टरमीडिएट और स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन के मध्य संबंध का अध्ययन " किया। श्रीवास्तव ने अपने अध्ययन में पाया कि इन्टरमीडिएट और स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों में उच्च समायोजन, उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सहायक है।

उद्देश्य (Objective) :– इण्टरमीडिएट और स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों और समायोजन के मध्य संबंध का अध्ययन।

निष्कर्ष :– इण्टर मीडिएट और स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन के मध्य संबंध।

(17) <u>हुसैन, प्रो. ए.बी.एम. अख्तर</u> (2004) ने – विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं बुद्धिमता का घर में सामंजस्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। शोध कार्य हेतु ढाका (बाग्लादेश) के चार अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों से 64 छात्रों का चयन किाय।

उद्देश्य (Objective) :- विद्यार्थियें के पारिवारिक वातावरण एवं बुद्धिमता का घर में सामंजस्य के मध्य सार्थक संबंध पाया गया तथा उच्च बुद्धि के छात्रों का घर में सामंजस्य, निम्नबुद्धि छात्रों की अपेक्षा उच्च पाया गया।

(18) <u>शालू और आदित्य, एस</u> (2006) :- ने ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत किशोर अवस्था के बालक एवं बालिकाओं के विद्यालय सामंजस्य (कारक-सामाजिक भावनात्मक, शैक्षिक) का तुलनात्मक अध्ययन कीया शोध कार्य में शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत 13 से 14 वर्ष के 6वी से 7वी तक के 33 बालिकाओं को सम्मिलित किया गया । जिसे शोधकर्ताओं द्वारा रूपांन्तरित करके प्रयोग किया गया।

उद्देश्य (Objective) :- ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत किशोर अवस्था के बालक एवं बालिकाओं के विद्यालय सामंजय (कारक-सामाजिक, भावनात्मक, शैक्षिक) का तुलनात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष :- बालक तथा बालिकाओं का विद्यालय में भावनात्मक सामंजस्य में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ जबकि सामाजिक एवं शैक्षिक स्तर पर सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ।

(19) <u>मोनिका मोहन, कुलश्रेष्ठ, उषा एवं तिवारी, मनीषा</u> (2006) :- ने छात्रावासी एवं गैर-छात्रावासी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं सामंजस्य का अध्ययन किया। शोध कार्य में न्यादर्श हेतु स्थानतक स्तर की 33 छात्रावासी छात्राओं की सम्मिलित किया। जगदीश और श्रीवास्तव द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ मापनी तथा सिन्हा एवं सिंह द्वारा निर्मित सामंजस्य मापनी का उपयोग किया गया।

उद्देश्य (Objective) :- छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं सामंजस्य का अध्ययन।

निष्कर्ष :- छात्रावासी एवं गैर - छात्रावासी छात्राओं के घर, स्वास्थ एवं सामाजिक कारको के मध्य सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ। जबकि उनके मानसिक स्वास्थ के विभिन्न आयामों में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ।